आप सभी विद्वानों को मेरा सादर प्रणाम ।

हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने २५ दिसंबर को काशी से भारत को “विश्वगुरु” बनाने का संकल्प किया है।

उसी दिशा मैं आगे बढ़ने के लीये एक ठोस विचार इस "पुण्यनगरी" - जिसे "दक्षिण काशी" भी कहा जाता है, मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ

मैं कोई भाषाशास्त्री या विद्वान नहीं हूँ । लेकिन इस विषय का महत्व एवं विना विलम्ब कार्यान्वित करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यहाँ आप सभी विद्वानों के सन्मुख मेरे विचार प्रस्तुत करने की हिम्मत कर रहा हूँ ।

मेरा आप सभी विद्वानों से अनुरोध है की मेरे इस प्रस्तूति में जो त्रुटियाँ हैं उन्हें दूर करने के लिए आपके मौलिक विचारों से सहाय्य प्रदान कीजिये ।

इस विचार को और सशक्त बनाने में तथा क्रियान्वित करने में हम सभी योगदान देंगे तभी यह प्रचंड "राष्ट्रकार्य” संभव हो पायेगा।

काव्य सम्मेलन के लहजे में आपसे मेरे इस प्रस्तुति को "आशीर्वाद" मांगता हूँ ।

मुझे यहाँ मेरे विचार प्रस्तुत करने का अवसर देने के लिए मैं आयोजकों का अत्यंत आभारी हूँ ।

प्रस्तुती की रुपरेखा

इस लेख के निम्नलिखित उद्देश्य है :

(१) भारत के सभी नागरिकों को ३००० संस्कृत शब्द सिखाना, जिससे समूचे देश में संपर्क के लिये एक भाषा होगी ।

(२) यहाँ पाठशालाओंमें अलग अलग कक्षाओं में किस तरह भाषाओं को पढाया जाना चाहिये इसका संपूर्ण विस्तार से सुझाव दिया है । इस पद्धति को अपनाने से विद्यार्थीओं का बोझ बहुत कम होगा तथा वे हँसते खेलते भाषाएँ आसानी से सीख पाएँगे । इसके कारण शिक्षक एवं विद्यार्थी के माता-पिता का भी बोझ कम होगा ।

(३) इस तरीके से विभिन्न कक्षाओं में भाषाएँ पढ़ाने से हमारे भारत की सभी भाषाएँ तथा संस्कृत भाषा विकसीत होंगी, हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का सभी भारतीयों में सिंचन होगा । एक नये जोशीले राष्ट्रप्रेमी समाज का निर्माण होगा ।

इस लेख में नीचे दीये हुए विषयों का क्रमशः विवरण किया है :

अ. देश में एक भाषा होने के फायदे ।

आ. भारतीय भाषाएँ तथा संस्कृत भाषा का ह्रास होने के कारण ।

इ. विद्यार्थीओं को पाठशाला में विभिन्न कक्षाओं में भाषा पढ़ने में आनेवाली कठिनाईयाँ ।

ई. मातृभाषा एवं खासकर संस्कृत पढने से लाभ

उ. ३००० शब्दों का आम आदमी के लिये भारतीय भाषाओं में तथा संस्कृत में शब्दकोष कैसे बनाएँगे इसकी विस्तार से चर्चा ।

ऊ मातृभाषा, हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाएँ विभिन्न कक्षाओं में पाठशाला में कैसे पढानी चाहिये इसका विस्तार से सुझाव (पद्धतिका) ।

ए. रंगीन ३००० शब्दों के भाषा कोश का उदाहरणात्मक २१ शब्दों का तक्ता ।

हमारी सभी भाषाओं का विकास करने के लिये और पूरे देश में एकात्मता लाने के हेतू शालामें संस्कृत पढ़ाने का नया प्रस्ताव

पी.डी. लेले, भौतिकशास्त्र विभाग, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद-३८०००९

संक्षिप्त रुप

हमारे देश के अलग अलग प्रांतो के लोगों को एक दूसरे के साथ बातचीत करने में कठिनाई होती है, क्योंकि सबकी भाषा एक नहीं है । पहले भी इसके लिए काफी प्रयास हुए हैं, पर आजतक ऐसी भाषा अस्तित्वमें नहीं है । एक नयी योजना यहा प्रस्तुत की गयी है । इस आसान योजना से १५ वर्षो में समूचे भारत में एक भाषा के स्वप्न साकार होगा । भारतीय भाषाओं में १०% से ३०% तक संस्कृत शब्द है । मराठी में 'पाणी' हिंदी में 'पानी', संस्कृत में 'जल', बांगला में 'जोल', कन्नड में 'नीर' शब्द Water का समानार्थी है । सामान्य नागरिक को ३००० शब्दोकी रोजमरा जीवन में जरुरत होती है । यदी हम ३००० शब्दों करी सूची बनाए और उसमे समानार्थी विभिन्न भारतीय भाषाओं में इस्तमाल कीये जाने वाले अधिक चार शब्द (जो संस्कृत से है) स्कूलों में पढाएँगे तो एक भाषा देश में सब को ज्ञात होगी ।

इस लेख में दूसरा महत्व का विचार स्कूलों में बच्चों को विविध कक्षाओं में भाषाएँ तथा लिपीयाँ कैसी पढाई जानी चाहिए इस नयी पद्धति का सुझाव है । आजकल १ कक्षा से ही बच्चा राज्य की भाषा और उसकी लीपी, हिंदी राष्ट्रभाषा और उसकी देवनागरी लीपी तथा अंग्रीजी और उसकी लीपी यह सभी ३ भाषाएं एक साथ पढता है । इस कारण उसका जीना मुश्किल हो गया है । यहाँ सुझाव है की १ से ३ कक्षा तक केवल मातृभाषा (प्रांत की भाषा) पढाई जाये, ४ से हिंदी- देवनागरी पढाई जाये, ७ कक्षा से संस्कृत तथा अंग्रेजी शुरुआत से पढाई जाये ।

इस पद्धती को कार्यान्वित करने से विद्यार्थी हसते खेलते सभी भाषाएँ अच्छी तरह सीख पायेगा । वह हमारी संस्कृति, रहनसहन से जुडा रहेगा । हमारी सभी भाषाएँ तथा संस्कृत भाषा का विकास होगा । विद्यार्थीओं में भारतीय संस्कारों का सिंचन होगा ।

प्रस्तावना:

१. पूर्वोत्तर राज्य, दक्षिण भारतीय राज्य, उत्तरी भारत, बंगाल के लोगों को एक दूसरे से संपर्क करने में कठिनाई होती है क्योंकि हमारे यहाँ सभी को एक भाषा नहीं आती ।

२. संपूर्ण देश में सभी लोगों को एक सामान्य भाषा आने से निम्न लिखित फायदें होंगे ।

a) प्रवास में बातचीत की आसानी ।

b) सरकार के दस्तावेंजो में आसानी ।

c) हमारी भाषांओ के साहित्य का आपस में आदान प्रदान ।

d) संपूर्ण देश में अच्छी शिक्षा पद्धति ।

यह विषय नया नहीं है और भूतकाल में बहुत प्रयत्न भी हुए हैं लेकिन अभी तक हमें सफलता नहीं मिली है ।

इतिहास एवं आज की बुरी हालत :

a) भाषा आधारित राज्यों के निर्माण से हमारे देश में भाषा के मुद्दे पर विघटन हुआ है । फलस्वरुप कर्नाटक में केवल कन्नड भाषा को उभारा जाता है और अन्य सभी भाषाएँ उपेक्षित हैं । वैसे ही महाराष्ट्र में मराठी, तमिलनाडु में तामिल के बारे में होता है । सरकारी नीति के कारण अन्य राज्यों के भाषिकों को भुगतना पड़ता है ।

b) उपरोक्त कारण से हमारे शहरों में हर राज्य में अन्य भाषिक लोगों ने अपने बालकों को अंग्रेजी माध्यम में पढाना २५ वर्षों से शुरु किया है । (मैं गुलबर्गा कर्नाटक में मराठी माध्यम में पढता था । मेरे सभी वर्ग मित्रोंने आपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढाया । इतना ही नहीं कर्नाटक में कन्नड में पढनेवाले ५०% से ज्यादा मेरे वर्ग मित्रोंने अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाया । यह चित्र थोडी बहुत मात्रा में सभी राज्यों में पाया जाता है । शुरु में महानगरों में, बाद में शहरो में और अब छोटे कसबों में भी अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने की होड लगी है ।

इसके कारण सभी भारतीय भाषाओं का ह्रास हो रहा है । बहुत ही कम नया साहित्य भारतीय भाषाओं में लिखा जा रहा है । अंग्रेजी माध्यम में पढनेवाले विद्यार्थीओं को

अपनी मातृभाषा में साहित्य एवं अन्य वाचन करने में कोई रुची नहीं होती । इससे हमारी भाषाओं का प्रयोग घटता जाएगा । यदि स्कूल का यही हाल रहा तो आने वाले २५ वर्षों के बाद भारतीय भाषाएँ केवल बोली भाषाएँ रह जायेगी और इसके पश्चात ७५ वर्षों के बाद हमारी सभी भाषाएँ, संस्कृत, मृत भाषाएँ हो जाएँगी ।

c) एक संशोधन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि हर एक वर्ष इस पद्धति में पढने से नास्तिक विद्यार्थीओं में ४% की वृध्धी होती है । उन्हे अपनी परंपरा और संस्कृति में विश्वास नहींरहा ।

बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाने के कारण हो रहे अत्याचार :

a) Play Group / Nursery / KG / पहली कक्षा से ही हम बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढाने की होड में जुटे हुए हैं । बच्चों को अंग्रेजी अक्षर तथा उसके उच्चार दोनों याद करने पडते है । उनको शब्द का स्पेलींग व अर्थ भी याद करना पडता है । अंग्रेजी मातृभाषा न होने के कारण बहुत कठिनाई होती है । बच्चा अंग्रेजी भाषा का व्यवहार में उपयोग भी नहीं करता है । हमारी शिक्षा पद्धतिने बच्चों का जीना दुभर कर दिया है ।

b) बच्चो को राज्य की भाषा (गुजरात में गुजराती) के अक्षर, शब्द, अर्थ वगैरह पहली कक्षा से ही पढना होता है ।

c) हिंदी राष्ट्रभाषा होने से वह भी पहली कक्षा से पढनी पड़ती है ।

d) तीन भाषा फार्मूला में उसे तीनों भाषाएँएक साथ पहली कक्षा से पढनी पडती है । और यदि बालक दूसरे राज्य से आता है (जैसे की बंगाली गुजरात में निवास करता है) तो उसको मातृभाषा बंगाली के अलावा तीन भाषाएँ पढनी होती हैं ।

देहातो में सामान्य परिवारों में मातापिता दोनों निरक्षर होंने से बच्चे को तीन भाषाएँ पढाना मुश्किल होता है और टयूशन रखनी पडती है । बहुत अमीर शहर के परिवारों में मातापिता दोनों नोकरी करते हैं एवं व्यस्तता के कारण बच्चोंको टयूशन द्वारा ही पढ़वाते हैं । बच्चे का खेलकूद का समय पढने में नष्ट होता है और वह भाषाओं को ठीक से पढ नहीं पाता है । वहउसकी घृणा करने लगता है ।

छोटे बच्चों को मातृभाषा में ही पढ़ाना चाहिये :

जब बच्चों को पहली बार स्कूल में पढाया जाता है तो मातृभाषा में ही पढाना चाहिये । बच्चा २-३ साल की उम्र में ही घर में या आस पास के लोंगो से मातृभाषा में व्याकरण की जानकारी के बिना, शब्दों का अर्थ रटने के बिना ही आसानी से शुद्ध भाषा बोलता है । मातृभाषा में पढ़ाने से उसे केवल अक्षर की पहचान तथा लिखने पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है ।

दुनिया में करीब करीब सभी देशों में पहली कक्षा से केवल मातृभाषा में ही पढ़ाया जाता है ।

हमारे बच्चों को KG से ही अंग्रेजी पढ़ाने का अट्टाहास क्यों ? उसकी जिंदगी में बिना वजह ही तकलीफ खड़ी क्यों करनी है । इसके कारण बच्चों का आत्मविश्वास घटता है । उसका आत्म सन्मान नष्ट होता है । वह अस्मिता खो बैठता है और अपने रीतिरिवाजों को अंधश्रद्धा समझ बैठता है । वह अपनी संस्कृति से नफरत करने लगता है । फलस्वरुप एक या दो पीढीओं में ही हमारी हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति, साहित्य, कला व रीति रिवाजों का संपूर्ण नाश होने की स्थिति उत्पन्न हो गई है ।

भाषाएँ पढाने का उद्देश्य / लक्ष / हेतु :

a) हमें आसानी से आसपास और दुनिया भर में लोगों से संवाद स्थापन करने में सक्षम करना है ।

b) हमें अपनी बात सब के सामने आसानी से तथा सरलता से समझानी चाहिए । साईंस एवं तकनीकी के सभी ज्ञान को आसानी से ग्रहण करने में तथा प्रक्षेपित करने में क्षमता होनी चाहिये ।

c) भाषा साहित्य, संगीत, कला के आयामों की जानकारी तथा उनमें रुची लेने में सहायक होती है ।

d) अपनी संस्कृति एवं विरासत में उसे गर्व लेना चाहिये तथा उसमें उन्नति करनी चाहिये ।

e) विद्यार्थीओं में अच्छे संस्कारो का सिंचन करके उन्हे अच्छे समाज के घटक बनाना । अपने जीवन में उसे एक सर्वाभूति प्रेम, सहानुभूति एवं अनुकंपा रखने वाला व्यक्ति बनाना ।

f) भाषा पढने / पढाने का सर्व कार्य बहुत ही आसानी से कम से कम परिश्रम से हसतें खेलते संपन्न होना चाहिये ।

भाषा तथा लिपि पढने में क्रमश: निम्नलिखित कार्य करने पडते है :

a) हमें अक्षरों कोलिपि में कैसा लिखा जाता है वह**आकार** अच्छी तरह **याद करना** पडता है ।

b) हमें अक्षरों को लिपि के आकार के साथ जुडा हुआ **उच्चार याद** करना पडता है ।

c) अक्षरों से जोडकर शब्द बनाए जाते है । हमें **शब्द,** उनके **स्पेलींग, उच्चार** तथा **अर्थयाद** करने पडते है । (किसी भी अक्षरों का समुच्चय अर्थवाही शब्द नहीं बनता । जैसे की 'रजामक' हिंदी भाषा में ऐसा कोई शब्द नहीं है ।

d) शब्दों के समुच्चय से वाक्य बनाना । इस तबक्के में व्याकरण के नियमों को जानने से थोडी बहुत बुद्धी का प्रयोग किया जा सकता है । परंतु उपर दियेa), b), c) तीनों (Steps) कार्योमें केवल याद करना ही जरुरी है । वाक्य बनाने में भी याद करना जरुरी है । क्योंकि कोई भी शब्दों का समुच्चय अर्थपूर्ण वाक्य नहीं बनता जैसे कि "मैं दुनिया शीघ्र कमल संशोधन" ऐसा हिन्दी भाषामें कोई वाक्य नहीं है ।

सर्वाधिक आसान तथा वैज्ञानिक संस्कृत भाषा और देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :

संस्कृत भाषा बहुत ही कठिन है और उसमें बहुत मात्रा में याद (रटन) करना पडता है ऐसा सफेद झूठ जान बूझकर लोगों ने फैलाया है ।

यहाँ नीचे संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपिकी विशेषताएँ दी गई है :-

a) देवनागरी लिपि (फोनेटिक है) में हम जो लिखते हैं वही पढते हैं । अर्थात् अक्षरों के साथ जो उच्चार जुडा है वह एक के बाद एक पढ़ने से (अक्षर जैसे लिखे है वैसे ही पढते हैं) शब्द और वाक्य पढे जाते हैं ।

इस विशेषता के कारण हमें शब्द एवं वाक्यों के उच्चार याद नहीं करने पडते हैं ।

(अंग्रेजी में 'PUT' का उच्चार 'पुट' है तथा 'BUT' का 'बट' है 'COLOUR' का 'कलर' है और 'WHISTLE'का 'व्हिसल' है जिसमें 'T' अक्षर का उच्चार नहींकिया जाता उसे Silent 'T' कहते है ।

चीनी भाषा 'चित्र' लिपिहै और हर शब्द के लिये चित्र है । बहुत मात्रा में चित्र व उसके उच्चार याद करने पडते हैं ।)

इसी कारण उपर दिये (B) और (C) तबक्के संस्कृत - देवनागरी पढने में जरूरी नहीं होते ।

b) देवनागरी लिपि में अ, आ, ... अं आ (१२ स्वर) और ३६ व्यंजन (मूलाक्षर) क, का,..... है । इस कारण 36 x 12 = 432 अक्षरों के आकार प्राप्त होते है और उनकों लिखने का तथा उच्चार के नियम गणित जैसे पक्के हैं । इसी कारण 12 + 36 = 48 अक्षर आकार याद करने से ४३२ आकारों का भाषा में प्रयोग कर सकते हैं । हमें श्रम कम करने पडतेहैं और कम अक्षरों में बहुत अर्थ हम दुसरों को कह सकते है । (हमारी भाषा थोडे में ज्यादा कहने की क्षमता रखती है ।)

c) देवनागरी लिपि दुनिया में सबसे ज्यादा बैज्ञानिक है क्योंकि क, ख, ग... का उच्चार कंठ से त, थ, द... दांत को जिव्हा लगाने से होता है इत्यादि..... ।

d) संस्कृत में विभक्ति प्रत्यय का उपयोग होता है । रामः, रामौ, रामाः ..... रामस्य, रामयों रामाणाम् .... धातु के लिये हम गच्छामी, गच्छावः, गच्छामः... लिखते है । यहाँ भी व्याकरण में गणित जैसे पक्के नियम हैं ।

इस संस्कृत के व्याकरण के कारण भाषा लिखने में बोलने में, गाने में, "यमक", "अनुप्रास" बनाने में आसान है ।

वाक्य में कोई भी शब्द कहीं भी आगे पीछे लिखने सें अर्थ नहीं बदलता ।

रामः आम्रफलम् खादती = खादती राम आम्र फलम् दोनों का एक ही अर्थ है ।

RAM EATS MANGO ≠ MANGO EATS RAM

e) संस्कृत में २२ उपसर्ग जोडने से शब्दों के भिन्न २२ अर्थ बनते हैं । और यहाँ भी गणित जैसे पक्के नियम है । इस कारण एक शब्द याद करके ही हमें २२ शब्दों का और उनके अर्थों का ज्ञान मिलता है । जैसे योग, आयोग, प्रयोग, वियोग, सुयोग, कुयोग.....

संक्षेप में उपर दिये (a) to (e) से सिद्ध होता है कि संस्कृत - देवनागरी पढने के लियेआसान और वैज्ञानिक भाषा है ।

नई योजना की विशेषताएँ :

१. यह आसानी से कार्यान्वित की जा सकती है ।
२. ६ महिने से १२ महिने तक के समय में तैयारी करके योजना शुरु कीयी जा सकती है ।
३. ५ साल के बाद परिणाम आने लगेंगे तथा १०-१५ सालों में लक्ष प्राप्त होगा ।
४. इस योजना से निश्चित रुप सें ध्येय प्राप्त होगा इसके लिये बहुत धन की जरुरत नहीं है तथा हमारे पास जरुरी सब चीजे अस्तित्व में है ।

योजना क्या है :

१. **आज की सद्यस्थिती / वस्तुस्थिती / वर्तमानस्थिती**

A. हमारे सभी भारतीय भाषाओं में १०% से लेंकर ३०% संस्कृत के शब्द है ।

B. बहुत से विश्वकोष, डिक्शनरीयाँ, बहुल भाषाओं में बनाई हुई तैयार है ।

आसानीसे बोलने सीखने के लिये "रेपिडेक्स" तथा अन्य प्रकाशनों की पुस्तके मौजूद हैं ।

२. **क्या करना है ।**

A. आम आदमी को जीने के लिये ३००० शब्दों की जरुरत होती है । हमें सभी भारतीय भाषाओं तथा संस्कृत में ऐसी ३००० शब्दों की सूची तैयार करनी है ।

B. हमें यह ३००० शब्द १ कक्षा से १० वी कक्षा के सभी बच्चों को पढाने है ।

३. **योजना में नया विचार क्या है : पहला विचार**

A. 'पानी' - हिंदी में, 'पाणी' - मराठी में, 'जल' - संस्कृत में तथा हिंदी में, 'जोल' - बांगला में, 'नीर' - कन्नड में 'वॉटर' - अंग्रेजी में इस्तमाल करते हैं ।

B. हमें हिन्दी में एक ऐसी सूची बनानी है जिसमें पानी के समानार्थी हिंदी के सब शब्द हो । इसी में आएसंस्कृत शब्द, बांगला शब्द, दक्षिणी भाषाओं के शब्द, पंजाबी / कश्मीरी के शब्द हिंदी लीपी (देवनागरी) में लिखे होंगे । हमे ४ ऐसे शब्द चुनने है जो भारत में ६०% से ७०% लोग इस्तमाल करते हो तथा जो संस्कृत से जुडे हो । जो शब्द एक से अधिक भाषाओं में हो उसे प्राधान्य देना है ।

C. हमे ऐसी सामान्य आदमी के उपयोग के ३००० शब्द अलग चार भाषाओं के शब्द जो गुजराती विद्यार्थी पढेगा उससे अलग भाषाओं के शब्दतामिल विद्यार्थी पढेगा ।

D. इन ३००० शब्दों की सूची हमें स्कूलो में समुचे देश में पढानी है । इस योजना के फल स्वरुप तमिल आदमी बंगाली, हिंदी, शब्दों के जानेगा और आसमी आदमी को हिंदी और कन्नड शब्द ज्ञात होंगे ।

४. **इन भारतीय भाषाओंमें ३००० शब्दों की डिक्शनरियाँ कैसे बनानी है – सुझाव -**

A. एक राष्ट्रीय समीती बनाई जाय जो ३००० शब्दों का चयन करेगी

B. हर भारतीय भाषाओं में ५ विद्वानों की समितियाँ बनानी है जो उपरोक्त ३००० शब्दों की उन भाषाओं में डिक्शनरी बनाएंगे ।

C. य समितियाँ ६ से १२ महिनों में कार्य पूर्ण करेगी ।

५. **स्कूलों में विविध कक्षाओं में भाषाएँ पढाने की नयी पद्धति - दूसरा नया विचार**

(अर्थात् विद्यार्थीओ को ये ३००० शब्द समूचे देश में पढाने की कार्य पद्धति)

A. NCERT ने हर प्रदेश को भारतीय भाषाओं में तथा लिपि में ३००० शब्दो की तथा ४ अधिक शब्दों की सूचीयाँ प्रकाशीत करनी है । तथा यह ३००० शब्द

विभिन्न कक्षाओं में पहली से दसवीं तक कहाँ कहाँ कितने और कौनसे पढाने है यह निश्चित करके पुस्तके बनानी है ।

B. E-डिक्शनरी, E-पुस्तकें, CD, VDO, बोली भाषा का संचय, टयुटोरीयल इत्यादि विभिन्न भाषाओं में बनाकर पूरे देश में सरकार द्वारा स्कूलों में तथा इंटरनेट पर सबको मुफ्त में उपलब्ध करनी चाहिये ।

C. पहली कक्षा से आठवीं / दसवी कक्षा तक छात्र मातृभाषा मेंउसकी लिपि और संपूर्ण व्याकरण पढ़ेगा । अन्य भाषाओं के ४ अधिक शब्द ३००० शब्दों के समानार्थी भी पढेगा ।

D. चौथी कक्षा से दसवी कक्षा तक दूसरी भाषा याने हिन्दी, राष्ट्रभाषा में शब्दों की डिक्शनरी पढेगा ।

E. हमारे बोलने में जो शब्द आते हैं उससे बहुत अधिक शब्द समुच्चय हमारे पास होता है जो हम लिखने में इस्तमाल करते हैं (क्योंकि हमें शब्द चुनकर विचारकर उपयोग करने के लिये लिखते समय काफी वक्त मिलता है और उसे दुरूस्त भी किया जा सकता है । इससे भी कही अधिक बडा शब्दों का भंडार हमें ज्ञात होता है जिसे हम कभी स्वयं प्रयोग / इस्तमाल नहीं करते । लेकिन दूसरा बोलता है तो हमें संपूर्ण अथवा संदर्भ से समझमें आता है । पुस्तक में लेखक जो शब्द प्रयोग करते हैं वह भी हम पढते है तो समझ लेते हैं । और एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट करना चाहता हूँ - यदि हम अहमदाबाद में रहते हैं और किसी रिश्तेदार के यहाँ दिल्ली में १५ दिन रहकर वापस आते है तो वहा पर घर / बाहर जो भाषा इस्तमाल करते है उसमें पंजाबी, हरियाणी, राजस्थानी के बहुत से शब्द होते हैं और हमें समझ में भी आते हैं । घर आने पर हम उसमें से नये १००-२०० शब्दो दो / तीन महिनों तक उपयोग में भी लेते है परंतु धीरे धीरे इन शब्दों का उपयोग यहाँ पर बंद हो जाता है । ६०% से ७०% लोगों द्वारा इस्तमाल कीया जानेवाले ४ शब्दों को डिक्शनरी में केवल लिखने और स्कूलों में ३०००

शब्द पढाने से ये शब्द संपूर्ण देश में लोगों को ज्ञात होंगे । हिन्दी पढने वाला मध्यप्रदेश का विद्यार्थी कभी तमिल या आसामी शब्द इस्तमाल करेगा नहीं लेकिन यदि कभी वो आसाम या तामिलनाडु या बंगाल में जाता है तो उसको वहाँ की भाषा समझ में आयेगी ।

F. ३००० शब्द वही होंगे लेकिन अलग अलग प्रदेशों के विद्यार्थी अपनी अपनी मातृभाषा एवंलिपि में पढेंगे । और ४ अधिक शब्द हर प्रदेश के भाषा के लिये अलग अलग भाषाओं से लिये जायेंगे । पढाए जाएँगे । छात्र को केवल देवनागरी लिपि और हिंदी व्याकरण पढने के लिये श्रम करने होंगे । (यदि उसकी मातृभाषा हिंदी है तो यह और भी आसान है ।)

G. कक्षा ७ वी से १२ वी तक छात्र को संस्कृत और अंग्रेजी की पढाई शुरु करनी है । उसे देवनागरी लिपि और हिंदी आती है । इसलिये केवल संस्कृत व्याकरण सीखना है । अंग्रेजी भाषा शुरुआत से अक्षरों से पुरी तरह श्रम करके सीखनी है ।

H. यदि छात्र चाहे तो कक्षा ९ से १२ तक वह और कोई भारतीय या विदेशी भाषा जैसे के चीनी, जापानी, फ्रेंच, जर्मन आदि पढ सकता है ।

६. उपर दी गई योजना के तहत पढाई स्कूलों में करने के फायदे :

A. ८ साल की स्कूली शिक्षा में हर छात्र ३००० संस्कृत के शब्दों से पूरी तरह (भारतभर में इस्तमाल करने वाले) वाकेफ होगा तथा देवनागरी लिपि के द्वारा एक ही भाषा होगी ।

B. छात्रों का पढाई का बोझ कम होगा । यह इस पद्धति की उपलब्धी है / विशेषता यह कि छात्र को एक बार किसी एक ही भाषा या लिपि को पढने में महेनत करनी है । भाषाएँ और लिपिकी पढाई को अलग करके यह संभव हुआ है ।

C. कक्षा पहली से तीसरी तक केवल मातृभाषा और उसकी लिपि में पढना है । बोलना और व्याकरण आसपास और घर में हँसते खेलते स्वाभाविक रुप से आता ही है । केवल मातृभाषा की लिपि पढने का श्रम करना है ।

D. कक्षा चौथी से हिन्दी पढने के लिये केवल देवनागरी लिपि पर ध्यान केन्द्रित करना है और हिन्दी का व्याकरण पढना है । उसे शब्द, अर्थ, कविता, लेख पहले से ही आते है (मातृभाषा में) ।

E. कक्षा ७ वी में संस्कृत पढना है । उसे देवनागरी लिपि और हिंदी ज्ञात है । केवल संस्कृत व्याकरण सीखना है । यहाँ से उसे अँग्रेजी शुरुवात से पढनी है ।

F. उपर दी गई व्यवस्था में भाषाएँ / लीपी को पढाई में तीन तीन साल का अंतर है । पहले मातृभाषा (लीपी), फिर हिंदी – देवनागरी लिपि फिर संस्कृत भाषा और अंग्रेजी । इस तरह पढ़ने / पढाने से लेख / शब्द / लेसन / पाठ / कविताएँ / निबंध जो अगले तबक्के में पढे / पढाएँ है वही दोहराए जा सकते है केवल दूसरी नयी लिपिया दूसरी नयी भाषा में । इससे छात्र, उसके माता / पिता तथा शिक्षकों का बोझ बहुत कम होगा और विद्यार्थी हँसते खेलते ज्यादा परिश्रम किये बिना आसानी से भाषाएँ सीख पाएगा ।

G. मातृभाषा और उसकी लिपि में पढने के कारण हमारी सभी भारतीय भाषाएँ सशक्त होगी और नया साहित्य उत्पन्न होगा । देश के सभी प्रांतो के रहन-सहन, अलग आहार, व्यवहार, विचार, रीति रिवाजों के प्रति समाज में जागृति उत्पन्न होगी अभिमान और गर्व की भावना होगी । छात्र मातृभाषा, में सोचेगा और भारतीय दर्शन एवं संस्कृति से जुडा रहेगा । भारत में एक संस्कृत भाषा सभी देश में एकता की भावना उत्पन्न करेगी ।

H. संस्कृत(भाषा) - संस्कृति – संस्कार
भौतिक - भावनात्मक - अध्यात्मिक
हर नागरिक का और समाज का विकास इस योजना से निश्चित रुप से होगा
विकास निश्चित रुप से होगा ।

1 समारोप करताना थोडे मराठी ... .

2 "मराठी असे अमुची मायबोली .... " मराठी कविता

यदि हमें माँ (मातृभाषा) में तथा और भगिनी भाषाओंमे एवं दादी (संस्कृत) के कोख में पलना है और आनंद प्राप्त करना है तो हम सबको अभी इसी वक्त कार्य करना पड़ेगा।

मैंने पुणे के लोकमान्य तिलक संस्कृत विद्यापीठ से संस्कृत में "प्रवेश",
"प्रथमा " ... परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं।
"प्रवेश" परीक्षा के पहलेही पाठ में

"सत्यंवद, धर्मंचर, मातृदेवोभव,
पितृदेवोभव, आचार्यदेवोभव,
राष्ट्रदेवोभव, शीलंपरंभूषणं "

इससे ज्यादा **"VALUES BASED"** क्या हो सकता है ?

ग्लोबल व्हिलेज से आगे जाकर अपने यहाँ वसुधैव कुटुंबकम मतलब विश्वची माझे घर अर्थात हम दुनिया के सभी लोगोंको अपने घरका ही सदस्य मानते हैं।

इससेभी आगे जाकर संत ज्ञानेश्वर महाराजने कहा है "वृक्ष वल्ली आम्हा सोयरी -" मायने की सब जीव सृष्टि एक है।
कृण्वन्तो विश्वं आर्यम् यह चरितार्थ करनेके लिए आओ हमसब मिलकर प्रयास करें।
1. लोकमान्य तिलकजीने कहा था "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है..."।
2 अब हमको कहना पड़ेगा की "मातृभाषा मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है ... "।
3 आजकल **"NOW OR NEVER" "DO OR DIE"** ऐसे हालत पैदा होगये हैं।

अभी यदि हमने निष्क्रिय होकर या "मुझे क्या लेना देना" ऐसा कहकर कुछ कार्य नहीं किया तो आनेवाले २५-५० वर्षोंमें हमारी सब भाषाएँ एवं संस्कृति नष्ट हो जायेँगी ।

हमारे सर्व संत , इतिहास के महापुरुषों के बलिदान व्यर्थ हो जायेंगे।
इतिहास हमें कभी माफ़ नहीं करेगा।

अन्तमें आप सब का पुनः धन्यवाद ।